5

स्वर

हिंदुस्तानी संगीत पिछले 3500 वर्षों से चली आ रही संगीत की बहुत ही जटिल और सुंदर परंपरा है। इसका उद्गम भारतीय संगीत से हुआ और उत्तर भारत में ज्यादा प्रसिद्ध है। जब आप कोई भाषा सीखते है तो उसकी शुरुआत आप कुछ बुनियादी बातों जैसे व्याकरण, शब्द भंडार आदि से करते हैं। उसके बाद आप स्वयं के वाक्य बनाना प्रारंभ करते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों से परिचित कराए जाने के पहले आपको बुनियादी स्वरों को जानना आवश्यक है। स्वरों में सिद्ध होने के पश्चात् आप उसे सुधार और स्वयं अपनी धुनें बना सकते हैं। एक बार स्वरों में सिद्धहस्त होने के पश्चात् धुनों में सुधार, कोई बहुत कठिन काम नहीं है। इस पाठ में हम स्वरों की उत्पत्ति और उनके नाम के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप–

- स्वरों की उत्पत्ति की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्वरों के नाम बता सकेंगे;
- पशुओं और पंछियों में उनके समकक्ष बता सकेंगे; और
- संगीत के तीन प्रमुख तत्वों की विवेचना कर सकेंगे।

5.1 स्वरों की उत्पति

आपने पहली बार संगीत का अनुभव कब किया? जब आप छोटे बच्चे थे तो जब भी मां आपको सुलाना चाहती थी, खाना खिलाना चाहती थी या आपको दुलार करना चाहती थी, वो आपको गाना सुनाती थी। आपका भोजन, सोना, खेलना या कोई भी अन्य कार्य मां या घर की किसी अन्य महिला के गाने के साथ होता था। इन गानों में कई प्रकार के संगीत जैसे-शास्त्रीय, अर्द्ध-शास्त्रीय, सुगम आदि थे।

आइए, स्वरों की उत्पत्ति को अच्छी तरह से समझने के लिए एक कहानी सुनते हैं।

गायन प्रतियोगिता

कलिग वन का राजा, एक बाघ रवि वर्मा था जोकि सभी जानवरों की देखभाल अपने परिवार की तरह करता था। रविवर्मा को संगीत और गायन हमेशा से पसंद था। वह स्वयं एक बहुत अच्छे गायक थे। हर कोई उनकी गायन कला की प्रशंसा करता था। एक बार उन्होंने जानना चाहा कि कोई अन्य जानवर भी है जो उनकी तरह गा सकता है। इसलिए उन्होंने जानवरों और पक्षियों के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रत्येक जानवर और पक्षी ने यही सोचा कि वही विश्व के सर्वश्रेष्ठ गायक हैं और रविवर्मा उन्हीं का चयन करेंगे। उन सबने एक साथ गाना प्रारंभ कर दिया। लेकिन आप तो जानते हैं कि अगर सभी एक साथ गाना शुरू कर दें तो ये कितना परेशान करने वाला होता है।

रविवर्मा ने कहा कि अगर आप सभी एक साथ गाएंगे तो मैं सर्वश्रेष्ठ गायक का चयन नहीं कर सकता। तब रविवर्मा ने सभी पशुओं, पक्षियों, सरीसृपों, कीडों

आदि से निवेदन किया कि वे प्रतियोगिता हेतु अपना पंजीकरण करा लें। जंगली जानवरों, घरेलू पशुओं और जंगली पक्षियों सभी ने प्रतियोगिता के लिए पंजीकरण कराया क्योंकि सभी यह प्रतियोगिता जीतना चाहते थे।

सबके द्वारा पंजीकरण करा लेने पर राजा ने सभी को बारी-बारी से मंच पर निर्णयकों के समक्ष अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए बुलाना शुरू किया। यह वास्तव में एक बहुत अच्छी प्रतियोगिता थी जोकि 4 से 5 दिन तक चली। प्रतियोगिता के अंतिम दिन सभी प्रतियोगी अंतिम परिणाम के लिए बहुत ही उत्सुक थे। यह प्रतियोगिता बहुत ही विशेष थी। उन्होंने हजारों प्रतिभागियों में से 7 पशुओं और पक्षियों को चुना। प्रतियोगिता को स्तरीय बनाने के लिए उन्होंने कहा कि सात सुरों का 'स्वर' बनाया जाएगा। सभी गायकों को इसके नियम और स्तर को मानने के लिए कहा गया। अंततः मोर, गाय, बकरी, बगुला, कोयल, घोड़ा और हाथी विजेता के रूप में चुने गए। निर्णयकों ने पशु-पक्षियों को इंगित करते हुए सात स्वर निश्चित किए, जो इस प्रकार है-

1. मोर - शदजा (सा); आकाश में वर्षा के बादल छाने पर मोर की उत्साहजनक ध्वनि

2. गाय - रिषभ (रे); बछड़े से अलग होने पर गाय के रंभाने की ध्वनि

3. बकरी - गंधार (गा); झुंड में बकरी के मिमियाने की ध्वनि

4. बगुला - मध्यमा (म); बगुले के रोने की ध्वनि

5. कोयल – पंचम (पा); बसंत ऋतु में भारतीय कोयल की ध्वनि

6. अश्व (घोड़ा) – धैवत (धा); घोड़े का हिनहिनाना

7. गज (हाथी) – निषाद (नी); हाथी का चिंघाड़ना

5.2 भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्वर

आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत इन मानक स्वरों पर निर्भर है

स्वर चुनी हुई पिच है जिनसे संगीतकार आलाप, धुनों और रागों का निर्माण करता है। स्वर एक संस्कृत शब्द है जो कि एक सप्तक में स्वरों के क्रमिक स्वरों को इंगित करता है। सप्तक से तात्पर्य एक संगीतमयी नोट से दूसरे के मध्य दोगुनी आकृति के साथ अंतराल से है। संगीत में एक स्वर की पिच से तात्पर्य उसके आरोह और अवरोह से है। स्वर एक चुनी हुई पिच है।

उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत दो भिन्न परंपराएं हैं लेकिन उनमें बहुत सारी समानताएं भी हैं, जैसे कि–सात स्वर।

ऐसा माना जाता है कि हिंदुस्तानी संगीत के जो सात स्वर हैं उनकी उत्पत्ति प्रकृति की ध्वनियों से हुई है। ये सात स्वर इस प्रकार है–

1. सा – शदज

2. रे – रिषभ

3. गा – गंधार

4. मा – मध्यमा

5. पा – पंचम

6. धा – धैवत

7. नी – निषाद

स्वरों के संबंध में एक बड़ा रुचिकर तथ्य यह है कि सा, मा और पा की ध्वनि पक्षियों द्वारा की गई है जबकि रे, गा, धा और नी की ध्वनि पशुओं द्वारा दी गई है।

पाठगत प्रश्न 5.1

स्तंभ 'क' को स्तंभ 'ख' से मिलाइए–

	क		ख
1.	मोर	(i)	रे, रिषभ
2.	घोड़ा	(ii)	नी, निषाद
3.	गाय	(iii)	पा, पंचम
4.	कोयल	(iv)	सा, शदज
5.	हाथी	(v)	धा, धैवत

5.3 संगीत के मुख्य तत्व

प्राचीन भारतीय संगीत की आध्यात्मिक शक्ति से बहुत ज्यादा प्रभावित थे और इसमें से भारतीय शास्त्रीय संगीत का जन्म हुआ।

अधिकांश संगीत में तीन मुख्य तत्व होते हैं। यह हैं-

धुन, ताल और स्वर संगति।

धुन : भारतीय संगीत की धुन राग (दक्षिण भारत में रागम्) पर आधारित हैं। एक मापनी के समान, राग स्वरों की एक सूची है जिसका प्रयोग एक विशेष प्रकार के संगीत को बनाने में किया जाता है। राग स्वरों का एक समूह है।

ताल : भारतीय संगीत में ताल, छोटे-छोटे अंशों के स्थान पर एक लंबे और चक्रीय रूप में व्यवस्थित की जाती है जिन्हें ताल कहते हैं (दक्षिण भारत में तालम)। इसमें 106 से भी ज्यादा भिन्न-भिन्न ताल पाई जाती है।

एक संगीत प्रदर्शन में तालों का महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि यह धुन को एक विशिष्ट रूप और एक उद्देश्य देते हैं। ताल का अर्थ है दोनों हाथों से ताली बजाना। यह शब्द भारतीय कर्नाटक संगीत में किसी भी धुनों की किसी भी क्रमिक व्यवस्था और धुन के संपूर्ण विषय क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है। ताल वास्तव में एक समय निर्धारक की भूमिका अदा करता है। ताल किसी एक निर्धारित संगीत उपकरण के साथ आप की एक क्रमिक चक्रीय व्यवस्था है। हर एक प्रतिरूप का अपना एक नाम है। ताल के प्रत्येक दुहराए गए चक्र को आवर्तन कहते हैं।

स्वर संगति : स्वर संगति मुख्यत: संगीत उपकरणों जैसे सितार, तानपुरा या संतूर द्वारा की जाती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक स्वर संगति मुख्यत: तानपुरे पर बजने वाले सा, पा, तथा मा के संयोजन का परिणाम है जो पार्श्व में चलता रहता है। तानपुरा वाद्य में चार लंबे तंतु होते हैं। यह तंतु पूरे संगीत में एक के बाद एक

खींचे जाते है। तानपुरे के इन चारों तंतुओं के क्रमशः खींचने का चक्र लगभग 5 सेकेंड में पूरा होता है जो कि निरंतर चलता रहता है।

गीत और कविताएं भिन्न-भिन्न रागों में गाई जा सकती है। अगर आप गाते समय ताल को भी जोड़ लें तो गायन और भी अधिक आनंददायक हो सकता है। राग और ताल के साथ कोई भी गीत सुखदायक हो सकता है।

किसी भी गीत के लिए निर्धारित राग और ताल का संयोजन ही संगीत है। राग और ताल स्वर-रज्जु, संगीत उपकरण आदि माध्यमों से उत्पन्न किए जा सकते हैं। कोई भी स्वर अगर आप अपनी आवाज में गा रहे है उसे 'वीणा, बांसुरी, सितार, गिटार, शहनाई, कीबोर्ड, वायलिन आदि द्वारा दोहराया जा सकता है। अपनी आवाज में कोई भी ताल यदि आप प्रस्तुत कर रहे हैं उसे तबला, मृदंग, घट, ड्रम आदि द्वारा पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 5.2

निम्नांकित को एक वाक्य में समझाइए-

1. स्वर

2. धुन

3. ताल

4. स्वर संगति

आपने क्या सीखा

- स्वरों की उत्पत्ति

  1. मोर – शदजा (सा); आकाश में वर्षा के बादल छाने पर मोर की उत्साहजनक ध्वनि
  2. गाय – रिषभ (रे); बछड़े से अलग होने पर गाय के रंभाने की ध्वनि
  3. बकरी – गंधार (गा); झुंड में बकरी के मिमियाने की ध्वनि
  4. बगुला – मध्यमा (म); बगुले के रोने की ध्वनि
  5. कोयल – पंचम (पा); बसंत ऋतु में भारतीय कोयल की ध्वनि
  6. अश्व (घोड़ा) – धैवत (धा); घोड़े का हिनहिनाना
  7. गज (हाथी) – निषाद (नी); हाथी का चिंघाड़ना

- भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्वरों के नाम
- संगीत के तीन प्रमुख तत्व

  – धुन

  – ताल

  – स्वर संगति

पाठांत प्रश्न

1. पशुओं को इंगित करते हुए 7 स्वरों की सूची बनाइए।
2. निम्न शब्दों की व्याख्या कीजिए–

   स्वर, सप्तक और पिच
3. तानपुरा किस प्रकार स्वर–संगति के निर्माण में सहायक होता है?
4. गीत के गायन को सुखदायक और मधुर बनाने की विधि की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तरमाला

5.1

1. (iv)
2. (v)
3. (i)
4. (iii)

5.2

1. स्वर – स्वर एक चुनी हुई पिच है जिसके आधार पर एक संगीतकार अपनी धुन और रागों का निर्माण करता है।
2. धुन – भारतीय संगीत की धुनें रागों (दक्षिण भारत में रागम) पर आधारित है।

3. ताल – भारतीय संगीत की तालें छोटे मापक के आधार पर व्यवस्थित न होकर एक लंबे और चक्रीय रूप में व्यवस्थित होते हैं।

4. स्वर संगति – स्वर संगति मुख्यतः सितार, तानपुरा या संतूर द्वारा की जाती है।